पाठ 2: जॉर्ज पंचम की नाक (कमलेश्वर)

1. लेखक परिचय

कमलेश्वर हिंदी कहानी के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उन्होंने समाज की विसंगतियों और व्यवस्था पर तीखे व्यंग्य लिखे हैं। यह पाठ आज़ादी के बाद भारतीय शासन-प्रशासन की मानसिकता पर एक व्यंग्यात्मक चोट है।

2. विस्तृत सारांश

रानी का दौरा: इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय अपने पति के साथ भारत, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे पर आने वाली थीं। उनके आने की खबर से दिल्ली के सरकारी विभागों में हड़कंप मच गया। सड़कों की मरम्मत होने लगी और इमारतों को रंगा जाने लगा।

नाक की चिंता: एक बड़ी समस्या सामने आई—इंडिया गेट के सामने लगी 'जॉर्ज पंचम' (एक क्रूर ब्रिटिश शासक) की मूर्ति की 'नाक' गायब थी (किसी ने तोड़ दी थी)। रानी के आने से पहले मूर्ति पर नाक लगाना ज़रूरी था, वरना इसे सरकारी इज़्ज़त (नाक) का सवाल मान लिया गया।

मूर्तिकार की खोज: एक मूर्तिकार को बुलाया गया। उसने पहले उस पत्थर की खोज की जिससे मूर्ति बनी थी, लेकिन वह पत्थर कहीं नहीं मिला। फिर मूर्तिकार ने पूरे भारत के पहाड़ों का दौरा किया, लेकिन पत्थर विदेशी निकला। इसके बाद मूर्तिकार ने देश के सभी महापुरुषों (गांधी जी, सुभाष चंद्र बोस, आदि) और सन 42 में शहीद हुए बच्चों की मूर्तियों की नाक जाँची, लेकिन सबकी नाक जॉर्ज पंचम की नाक से **'बड़ी'** निकली।

ज़िंदा नाक: आख़िरकार, यह तय हुआ कि 40 करोड़ भारतीयों में से किसी एक की ज़िंदा नाक काटकर मूर्ति पर लगा दी जाए। मूर्तिकार ने ऐसा ही किया।

अख़बारों का मौन: अगले दिन अख़बारों में इस बात की कोई ख़ुशी नहीं छपी। अख़बारों ने केवल इतना लिखा कि "नाक का मसला हल हो गया है।" उस दिन किसी उद्घाटन या जश्न की खबर नहीं छपी, जो यह दर्शाता था कि पूरा देश इस शर्मनाक घटना से दुःखी और मौन था।

3. पाठ का मूल भाव

यह पाठ भारतीय समाज और सत्ता (सरकार) की **'गुलाम मानसिकता'** पर करारा व्यंग्य करता है। आज़ादी के बाद भी हम विदेशियों के सामने अपनी झूठी शान (नाक) बनाए रखने के लिए अपने ही देशवासियों के सम्मान और जान को दाँव पर लगा देते हैं। महापुरुषों की नाक बड़ी होना यह सिद्ध करता है कि हमारे शहीदों का सम्मान जॉर्ज पंचम जैसे तानाशाहों से कहीं ऊँचा है।

Schorbit